International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
www.hindijournal.com
Volume 1; Issue 1; November 2015; Page No. 08-09

हिंदी का अतीत, वर्तमान और भविष्य

किरण ग्रोवर

एसो॰ प्रो॰, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, डी॰एन्वी॰ कॉलेज, अबोहर

सारांश

हिंदी भरत में राष्ट्र भाषा के पद पर विराजमान है। इसका इतिहास स्वर्णिम है। जो एक विशाल परम्परा को अपने में समाए हुए है। इसमें प्रचुर मात्रा में साहित्य की रचना की गई है। हिंदी के अंर्तगत उत्तर भरत में बोली जाने वाली समस्त भाषाएँ सम्म्लित है। जिनका आज परिष्कृत उवं परिमार्जित रुप हमारे समक्ष विद्यमान है। हिंदी अपने वर्तमान रुप में सभी गुणों से समृद्ध है तथा अपने उजले भविष्य को संजोए हुए है।

कूट शब्द – इतिहास, भाषा, बहुभाषिकता

प्रस्तावना

'हिंदी' वास्तव में फारसी भषा का शब्द है जिसका अर्थ है हिंद से संबंधित। हिंदी शब्द की निष्पत्ति सिंधु सिंध से हुई है। ईरानी भषा में 'स' का उच्चारण 'ह' किया जाता था। इस प्रकार हिंदी शब्द में सिंधु भरत का प्रतिरुप है। कालांतर में हिंदी श्ब्द संपूर्ण भरत का प्र्याय बनकर उभरा। इसी 'हिंद' से 'हिंदी' शब्द बना। आज हम जिस भाषाको हिंदी के रुप में जानते है वह आधुनिक आर्य भाषाओं में से एक है। आर्य भाषा का प्राचीनतम रुप वैदिक संस्कृत है, जो साहित्य की परिनिष्ठित भाषा थी। वैदिक संस्कृत से अपभ्रंश के रुप में वह प्रतिष्ठित हुई। अपभ्रंश से ही हिंदी भाषा का जन्म हुआ। आधुनिक आर्य भाषाओं में हिंदी का जन्म 1000 ई0 के आस–पास ही हुआ किंतु इसमें साहित्य रचना का कार्य 1150 या इसके बाद प्रारंभ हुआ। अनुमानतः तेरहवीं शताब्दी में हिंदी भाषा में साहित्य रचना का कार्य प्रारंभ हुआ। वास्तव में हिंदी शब्द किसी भाषा विशेष का वाचक नहीं है बल्कि यह भाषा समूह का नाम है, उसमें आज के हिंदी प्रदेश क्षेत्र की 5 उपभषाएँ तथा 17 बोलियाँ शामिल है। बोलियों में ब्रजभाषा, अवधी एवं खड़ी बोली को आगे चलकर मध्यकाल में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है।

ब्रजभाषा साहित्य का प्राचीनतम उपलब्द्ध ग्रंथ सुधीर अग्रवाल का 'प्रधुग्न चरित' (1359 ई.) है। अवध की पहली कृति मुल्ला दाउद की 'चंद्रायन' या 'लोरकहा' (1370 ई.) मानी जाती है। खड़ी बोली का बीज रुप सिद्धो, गोरखनाथ आदि नाथों, अमीर खुसरो जैसे सूफियों, जयदेव, नामदेव, रामानंद आदि संतो की रचनाओं में उपलब्द्ध है। मध्यकाल में हिंदी का निखरा रुप हमें दृष्टिगोचर होता है। ब्रजभाषा और अवधी का अत्ययधिक साहित्यिक विकाश हुआ तथा तत्कालीन ब्रजभाषा साहित्य को कुछ देशी राज्यों का संरक्षण भी प्राप्त हुआ। इनके अतिरिक्त मध्यकाल में खड़ी बोली के मिश्रित रुप का साहित्य में प्रयोग होता रहा। इसी खड़ी बोली का 14 वीं सदी में दक्षिण में प्रवेश हुआ। आगे चलकर 18 वीं सदी में खड़ी बोली को मुसलमान शासको का संरक्षण मिला तथा इसका परिष्कृत और परिमाजित रुप उभर कर सामने आया। हिंदी को उच्च कोटि की साहित्यिक भाषा बनाने का तथाउसे गौरवान्वित करने का सर्वाधिक श्रोय ब्रज भाषा के कवियों को जाता है।

कष्ण भक्त कवियों ने अपने साहित्य में ब्रज भाषा के कवियों को जाता है। कष्ण भक्त कवियों ने अपने साहित्य में ब्रज भाषा का चरम विकास किया। सूरदास, नंददास, रसखान मीराबाई आदि कृष्ण भक्त कवियों ने ब्रज भाषा के साहित्यिक विकास में अमूल्य योगदान दिया। उत्तर मध्यकाल (अर्थत् रितिकाल) में अनेक आचार्यों उवं कवियों ने ब्रजभाषा में लाक्षणिक एवं रीती ग्रंथ लिखकर ब्रजभाषा के साहित्यिक भाषा के रुप में प्रतिष्ठित करने का श्रेय सूफी प्रेममार्गी कवियों को है। कुतुबन, जायसी, मंझनू, आलम, उसमान आदि सूफी कवियों ने अवधि को साहित्यिक गरिमा प्रदान की। इनमें सर्वप्रमुख जायसी थे।

अवधी को रामभक्त कवियों ने अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया विशेषकर तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' की रचना बैसवाड़ी अवधी में कर अवधी भाषा को जिस साहित्यिक उँचाई

पर पहुँचाया है वह अतुलनीय है। मध्यकाल में साहित्यिक अवधी का चरमोत्कर्ष दो कवियों में मिलता है, जायसी औश्र तुलसीदास। मध्यकाल में खड़ी बोली का मुख्य केन्द्रउत्तर से बदलकर दक्क्न में हो गया। इस प्रकार मध्यकाल में खड़ी बोली के दो रुप हो गए–उत्तरी हिंदी व दक्कनी हिंदी। खड़ी बोली मधकाल रुप कबीर, नानक, दादू, मलूकदास आदि संतो औश्र दक्कनी एवं उर्दू के कवियों आदि में मिलता है।

हिंदी के आधुनिक काल तक आते–आते ब्रजभाषा जन भाषा से काफी देर हट चुकी थी और अवधी ने तो बहुत पहले से ही साहित्य से मुँह मोड़ लिया था। 19 वी. सदी के मध्य तक अंग्रेजी सत्ता का महत्तम विकास भरत में हो चुका था। इस राजनिति परिवर्तन का प्रभाव मध्य देश की भाषा हिंदी पर भी पड़ा। नवीन राजनितिक परिस्थितियों ने खड़ी बोली को प्रोत्साहन प्रदान किया। जब ब्रजभाषा औश्र अवधी का साहित्यिक रुप जन भाषा से दूर हो गया तब उनका स्थान खड़ी बोली धीरे–धीरे लेने लगी।

हिंदी के आधुनिक काल के प्रारंभ में एक ओर उर्दू का प्रचार होने लगा और दूसरी ओर काव्य की भाषा ब्रजभाषा होने के कारण खड़ी बोली को अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करना पड़ा। 20 वी. सदी में खड़ी बोली को प्रतिष्ठित करने में विभिन्न धार्मिक सामाजिक एवं राजनितिक आंदोलनों ने बड़ी सहायता की। फलतः खड़ी बोली साहित्य की सर्वप्रमुख भाषा बन गयी। अपने विभिन्न क्षेत्रीय भाषा–रुपों में रचित समृद्ध साहित्य को लेकर हिंदी आज के अपने परिनिष्ठत स्वरुप तक पहूँची है। देश के विभिन्न समुदायों और मतावलंबियों के निरंतर योगदान से इसका सामासिक प्रकृति अक्षुष्ण रहीं है। मध्यकाल में फारसी भले ही राजभाषा थी किंतु जनता में व्यवहार की भाषा तो यहीं थी, जिसे भाषा या भाखा कहा गया। वर्तमान समय में हिंदी का चहुँमुखी विकाश हुआ है। काव्य ही नहीं गद्य की विद्याओं में भी भरपूर प्रयोग किए गए है। आज गद्य में नवीन विद्याओं का आविर्भव हुआ है। कहानी, नाटक तथा उपन्यास की सीमाओं को लांघता हुआ आज गद्य रेखाचित्र, संस्मरण, रिपोताज, रेडियो रुपक आलोचना आदि तक अपने पाँव पसार चुका है। नवीन परिवेश में प्रवेश करते हुए गद्य ने देश–विदेश के साहित्य से संपर्क स्थानिपत किया औरअपने खजाने में वृद्धि की। अब केवल मैलिक ही नहीं अनूदित साहित्य की भी रचना की जाती है। हिंदी साहित्य की यह विशेषता रही है कि उसने उत्तम कोटि के साहित्यकार विश्व को प्रदान किए है। हिंदी के साहित्यकारों ने ज्ञान के सभी क्षेत्रों को हुआ है। आज हिंदी भाषा में सभी विषयों की सामग्री लिखि जाती है तथा साहित्यकार भाषा को समृद्ध करने में रत रहते हैं।

भारत एक ऐसा देश है जहाँ बहुभाषिकता को प्रधानता दी गई है। यहाँ अनेक भषाओं में साहित्य की रचना की जाती है। बहुभषिकता की दृष्टि से भारत संभवतः विविधताओं और विचित्रताओं वाला देश है। भिन्न भाषा–भषियों के बीच में परस्पर संवाद के लिए अलग–अलग स्तरों पर कोई–न–कोई भाषा संपर्क भाषा की जिम्मेदारी निभातही दिखाई देती है। बहुभाषिक समाज में किसी भाषा का संप्रेषण धनित्व सर्वत्र एक जैसा नहीं हीता बल्कि एक भाषा क्षेत्र से दूसरे भाषा क्षेत्र के संपर्क में आने वाले क्षितिजों पर यह काफी बदलता है।

कुछ लोगों का यह कहना है कि अंग्रेजी ही भरत की संपर्क भाषा हैं। उन्हें यह जान लेना चाहिए कि कोई विदेशी भाषा हमारी समस्याओं का समाधान नहीं कर सकती है। राष्ट्रीय एकता सांस्कृतिक विरासत और सामाजिक संपदा की सुरक्षा के लिए हमें अपनी भषाओं के साथ ही एक संपर्क भाषा का विकास करना होगा। यह भाषा हिंदी ही हो सकती है। प्रायः यह कहा जाता है कि भूमंडलीकरण और बहुराष्ट्रीय कंपनियों के कारण दुनिया के उन मुल्कों में भी अंग्रेजी का महत्व बढ़ रहा है जहाँ दो दशक तक इनका प्रयोग नहीं होता था। परंतु किसी अन्य देश की तुलना भारत के बहुभाषिक परिदृश्य से नहीं की जा सकती है। डा0 राजेन्द्र मिश्र याद याद दिलाते है कि बहुभाषिक यथार्थ का अकाट्य सत्य यह है कि भारत में हिंदी ही एकमात्र भाषा है जिसे बहुसंख्यक भरतवासी बोलते है और समझते है। आजादी के बाद हिंदी साहित्य बढ़ा है। उसके कोशों का विस्तार हुआ है। उसमें नए श्ब्दों का निर्माण हुआ है। आज संसार में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है।अतः संसार उसका अंतराष्ट्रीय रुप में विकास हुआ है। एशिया ही नहीं यूरोप और अमेरिका के देशों में भी हिंदी समझने वाले लोग है प्रायः कहा जाता है कि आने वाले समय में वहीं भाषाएं जीवित रहेंगी जो बाजार की भाषाएँ होंगी। इस कसौटी पर हिंदी दुनिया की सबसे बड़े बाजार की संपर्क भाषा है। अतः उसका भविष्य सुरक्षित है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. हिंदी साहित्य का इतिहास – रामचंद्र शुक्ल
2. हिंदी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास – रामचंद्र शुक्ल
3. हिंदी साहित्य का इतिहास–श्यामचंद्र कपूर
4. हिंदी साहित्य का आदिकाल– हजारी प्रसाद द्विवेदी
5. हिंदी साहित्य का इतिहास आदिकाल से रितिकाल– शेखर शर्मा
6. हिंदी साहित्य की भुमिका– अमरेश दत्ता – पृष्ठ 1578
7. भविष्य का इतिहास– राजेन्द्र मिश्रा